दिसम्बर 2019

सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 33 पंचम् अंक

इस अंक में...

5 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

7 समसामयिक सामान्य ज्ञान
15 आर्थिक परिदृश्य
20 राष्ट्रीय परिदृश्य
23 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
29 क्रीड़ा जगत्
32 विज्ञान समाचार
34 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
35 सारभूत तत्व कोष

लेख

38 सामयिक लेख—किसानों के लिए उपयोगी मोबाइल एप
41 पर्यावरण लेख—जी-30 शिखर सम्मेलन में जलवायु संकट पर 19 देशों ने दिखाई एकजुटता
42 स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख—खतरनाक है ई-सिगरेट : भारत में लगा प्रतिबन्ध
44 द्विपक्षीय सम्बन्ध—भारत की 'एक्ट फार ईस्ट' नीति और रूस

हल प्रश्न-पत्र

46 छत्तीसगढ़ सहायक ग्रेड-3 डाटा एण्ट्री/कम्प्यूटर ऑपरेटर संयुक्त भर्ती परीक्षा, 2018
59 हरियाणा सब-इंस्पेक्टर पुलिस भर्ती (महिला) परीक्षा, 2018

आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित लिपिकीय संवर्ग (प्रा.) परीक्षा, 2018

64 तर्कशक्ति
67 संख्यात्मक अभियोग्यता
71 English Language
74 आर.पी.एफ./ आर. पी. एस. एफ. सब-इंस्पेक्टर (एक्जीक्यूटिव) भर्ती परीक्षा, 2018
83 आर.पी.एफ./ आर.पी.एस.एफ. कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा, 2018
91 केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2019 (पेपर II : कक्षा VI से VIII के लिए)
103 रेलवे रिक्रूटमेण्ट बोर्ड लेवल-1 ग्रुप 'डी' कम्प्यूटर आधारित परीक्षा, 2018
111 राजस्थान कृषि पर्यवेक्षक सीधी भर्ती परीक्षा, 2018
116 आगामी बिहार सब-इंस्पेक्टर (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
120 समसामयिकी वस्तुनिष्ठ-प्रश्न

विविध/सामान्य

123 बिहार सरकार की प्रमुख योजनाएं
125 वार्षिक रिपोर्ट : 2018-19—भारत-पर्यटन के विकास, प्रचार -प्रसार गतिविधियों एवं सर्वेक्षण क्षेत्र में बढ़ते चरण : एक दृष्टि में
127 ज्ञान वृद्धि कीजिए
130 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

भारतमाता के सेवाभावी सपूत बनिए

माना कि अँधेरा घना है,
लेकिन दिया जलाना कहाँ मना है।
– नरेन्द्र मोदी

''हमारी माँगें पूरी हों, हमारी माँगे पूरी हों''– इस नारे से आजकल समस्त दिशाएं गूँजती रहती हैं. आज जिधर देखते हैं, उधर माँगें ही माँगें हैं. विद्यार्थी हों या अध्यापक, मजदूर हों या किसान, कर्मचारी हों अथवा अधिकारी, डॉक्टर हों या इंजीनियर–सब माँगे लेकर खड़े हैं, सब माँग रहे हैं. मानो हमारे देश में भिखारियों की जमात एकत्र हो गई है, हमारा सारा का सारा राष्ट्र भिखारी हो चला है. क्या हमने, आपने कभी यह विचार किया है कि जब पूरा राष्ट्र माँग रहा है, तब देने वाला कौन है, क्या वह आसमान से टपकेगा ?

हम माँग शासन से करते हैं और समझते हैं कि शासन हमारी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति कर देगा. प्रकारान्तर से हम अपने अवचेतन में यह मान बैठे हैं कि हमारी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति का उत्तरदायित्व सरकार का है. कैसी विडम्बना है कि राजनीति का व्यवसाय करने वालों की सब्जबाग दिखाने वाली बातों में आकर हम निकम्मे होते जा रहे हैं ? उद्यमहीनता को पुरुषार्थ का लक्षण मान बैठे हैं. लुभावने वायदों में पड़कर हमारी मानसिकता विकृत हो गई है, हम अपने स्वाभिमान को भूलकर केवल दीनता प्रदर्शित करने वाले भिखारी बन बैठे हैं.

शासन या सरकार कहाँ से देती है, अथवा देगी–क्या हमने कभी इस पर विचार किया है ? देने वाली है रत्नगर्भा हमारी भारतमाता. उर्वरा भूमि, अनेक पर्वतों–उनसे निकलने वाली अमृतमयी नदियाँ, उसके वनों में उत्पन्न होने वाली सम्पदा, खनिज आदि उसकी सम्पत्ति के विपुल भण्डार हैं. सरकार इनका दोहन करती है, प्रशासन उसका वितरण करता है. ऐसा करते हुए शासन-प्रशासन बिचौलियों के रूप में कितनी दलाली खा जाता है–इसका लेखा-जोखा किसके पास है ? अनेकानेक घोटालों का पर्दाफाश इसकी झलक यदा-कदा दे जाता है. हम और आप यदि भारतमाता की वेदना को सुनने-जानने का प्रयत्न करेंगे, तो वह यह कहती हुई सुनाई पड़ेगी–मरे बेटो, तुम्हारी आवश्यकताओं की पूर्ति के नाम पर सरकारी अफसरों ने मेरी सम्पदा का मनमाना दुरुपयोग किया है. वनों को उजाड़ दिया है, नदियों को सुखा दिया है, खदानों को खाली कर दिया है तथा रासायनिक खादें डाल-डाल कर मेरी मिट्टी को विषाक्त बना दिया है आदि. यह सब किया जाता है. स्वार्थपूर्ति के लिए–अपने घरों को भरने के लिए, परन्तु नाम लिया जाता है तुम्हारा, दुर्भाग्य यह है कि तुमने उनके इन कारनामों की उपेक्षा ही नहीं की है, अपितु आलसी और लालची बन गए हो. इतना पढ़-लिखकर, इतनी उपाधियाँ प्राप्त करके क्या तुम इतना भी नहीं समझते हो कि देने वाली तो मैं हूँ, शासन-प्रशासन तो मेरे कारिंदे और मुनीम हैं. वे तुमको क्या दे सकते हैं ? परन्तु मैं कब तक देती रहूँगी. कब तक दे सकूँगी ? खाते-खाते तो कुबेर का भी खजाना खाली हो जाता है. बड़े-बड़े कुएं भी रीते हो जाते हैं. स्वतंत्रता-संग्राम के मध्य एक आवाज आई थी–